शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसंबर 2016

पवित्र चरित्र बल से सात्विक व्यक्तित्व निर्माण

प्रो. बनवारी लाल जैन
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

जैसे एक इमारत की मजबूती उसकी नींव से आंकी जाती है, उसी तरह एक इंसान अपने चरित्र से पहचाना और सराहा जाता है। कोई भी इंसान अच्छे-बुरे चरित्र के साथ पैदा नहीं होता है लेकिन मरता है तो अच्छे-बुरे चरित्र के साथ मरता है। हर व्यक्ति का चरित्र पवित्र होता है, लेकिन वातावरण के साथ अच्छा और बुरा बन जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पवित्र चरित्र बल से सात्विक व्यक्तित्व निर्माण पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

चरित्र गुण, ज्ञान व आत्मानुशासन से निर्मित होता है। चरित्र को हम स्त्री-पुरूष के संबंधों तक ही सीमित मानकर चलते हैं, जबकि चरित्र इस छोटे से दायरे में ही नहीं बंधा हुआ है। जब इंसान इन सम्बन्धों को बाहरी ढंग से निभाता है तो चरित्रहीन समझा जाता है और अन्तर्मन विषय-वासना से भरा होता है तब उसे चरित्रवान समझते हैं। लोभ-लालच में आसक्त होकर धूर्तता से लोगों के साथ कपट करने लगता है तब वह चरित्रहीन बन जाता है। दोहरे जीवन जीने वाले व्यक्ति पाखण्डी होते हैं। अपने सरल जीवन को अपराध प्रवृत्ति में जोड़ लेते हैं तो वे समाज में अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रह पाते हैं। समाज में उनका चरित्र अपराध बोध के रूप में दृष्टिगोचर होता है। लालच और असत्य बोलने से भी चरित्र प्रभावित होता है। महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं है, परन्तु इसकी दिशा क्या है और उसे किन साधनों से पूरा किया जा रहा है, उससे व्यक्ति का चरित्र निर्धारित होता है। उज्जवल चरित्र की निर्मिति के लिए अत्यंत सजगता और सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

सात्विक व्यक्तित्व

चरित्र शब्द मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करता है। चरित्र की उज्ज्वलता से अपनी पहचान सद्पुरूष के रूप में की जा सकती है। कोई भी व्यक्ति अच्छे या बुरे चरित्र के साथ पैदा नहीं होता। वह अच्छी या बुरी परिस्थिति में पैदा हो सकता है। वही उसके चरित्र पर प्रभाव डालती है। कई बार तो कोई घटना ही उसके चरित्र का नाश कर देती है। यथा अपराधवृत्ति में पकड़े गये व्यक्ति का चरित्र समाज में विकृत चरित्र के रूप में पहचाना जाता है। मानसिक प्रतिक्रियाएं चरित्र का निर्माण करती हैं। कोई भी परिवार, विद्यालय, पड़ोस, समाज, देश व राष्ट्र सार्वजनिक सर्वहितकारी व निःस्वार्थकारी भावनाएं को छोड़कर अविश्वास, भ्रष्टाचार, वैमनस्य, असत्य, अशांति, बलात्कार, अपराध तथा उन्माद जनित

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

भावनाएं विकसित हो जाती हैं तो इन सबका मूल कारण चरित्रगत हीनता मानी जाती है, क्योंकि शुद्ध चरित्र वाले व्यक्ति का व्यवहार शुभ होता है और उसका व्यक्तित्व गलत दिशा में कार्य नहीं करता है।

चरित्रवान् बनने के लिए हम मन में सदैव शुद्ध, पवित्र व उच्च भावों को रखें। असत्य, अविश्वास छल-कपट, भ्रष्टाचार, पारस्परिक वैमनस्य, अशांति, बलात्कार एवं उन्माद जनित भावनाएं चरित्र को पतन की ओर ले जाती है।

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः। वसिष्ठ स्मृति 6/3

चरित्रहीन व्यक्ति को ज्ञान भी पवित्र नहीं करता है अर्थात् आचार (चरित्र) के बिना ज्ञान का कोई महत्व नहीं रह जाता है।

चरित्र ही मानव को श्रेष्ठ बनाता है। जो धन से नष्ट हुआ वह नष्ट नहीं है, किन्तु जो चरित्र से नष्ट हुआ वह सर्वथा नष्ट हो जाता है। उज्ज्वल चरित्र ही मानव को महापुरूष व देवता बनाता है। चरित्र खुद का बोया, खुद का सींचा और खुद का बनाया हुआ होता है। चरित्र में निहित विभिन्न तत्वों के संयोजन में बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यथा सोचने-विचारने की शक्ति, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति, एकाग्रता आदि विभिन्न मानसिक शक्तियों के विकास चरित्रबल काफी सक्रिय योगदान प्रदान करता है।

घर, परिवार, समाज, देश के वातावरण का प्रभाव चरित्र पर पड़ता है। अतः प्रेरणादायक वातावरण सुन्दर, स्वस्थ व अच्छी आदतों का निर्माण करता है।

स्किनर व हैरीमन के अनुसार, “ऐसा कोई पाठ्यक्रम या विधि नहीं है जो जादू के जोर से चरित्र निर्माण कर सके। इसके विपरीत घर, चर्च, खेलने का मैदान अथवा विद्यालय में होने वाला प्रत्येक अनुभव चारित्रिक विकास के अवसर प्रदान करता है। हृदय की भावना से पता चल जाता है कि सही या गलत क्या है ? दिव्यात्मा हमको हमेशा मार्गदर्शित करती है कि इस चीज से हमको खुशी मिलेगी या नहीं। शिक्षार्थियों में कुविचार, कुसंस्कारों, कुत्सित कार्य करने की प्रवृत्ति धूमिल विचारों को अन्दर प्रवेश करने से होता है, जिन्हें हमें रोकना चाहिए।”

जीवन की प्रगति दिव्य एवं उच्च भावनाओं से होती है। जो स्वयं दिव्य भावों से भरा होता है किन्तु दूसरों को उन भावों से संयुक्त नहीं करता है, ऐसा व्यक्ति स्वार्थी है, अज्ञानी है, अज्ञानी स्वार्थी एवं असावधान व्यक्ति डूब जाते है। दिव्य भावों वाला व्यक्ति निराश जीवन में आशा की किरणें भर देता है। दिव्य भावनाओं से युक्त व्यक्ति जाति, सम्प्रदाय, वर्ग विशेष, ऊंच-नीच की भावनाओं से परे रहता है। मूल प्रवृत्तियां चरित्र निर्माण की आधारशिलाएं है। इसलिए सबसे प्रथम मूल प्रवृत्तियां का शोधन, परिमार्जन व परिष्कृत किया जाना चाहिए। व्यक्तित्व को प्रभावति करने वाले विभिन्न संवेग मूलप्रवृत्तियां से ही पोषित होते है। अतः मूल प्रवृतियां, संवेग और व्यवहार ही चरित्र को अच्छा और बुरा मोड़ देने में समर्थ होते हैं। अतः चरित्रबल सुदृढ़ बनाने के लिए मूल प्रवृत्तियां, संवेग और व्यवहार का शोधन और प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। दृढ़ संकल्प के अभाव में चारित्रिक कमजोरियां व्यक्तित्व को कमजोर बना देती हैं। संकल्प शक्ति ही बुराईयां छोड़कर अच्छाईयां ग्रहण करने में पूरी सहायता करती है। चरित्र को आदतों का पुंज कहा गया है। अतः अच्छी आदतें व्यक्ति को अच्छा बना देनी हैं। बुरी आदतें उसे बुरा बना देती हैं। व्यक्ति की अपनी मान्यताएं, मूल्य और आदर्श उसके चरित्र को प्रतिबिम्बित करते हैं। जितने अच्छे आदर्श होंगे उसका चरित्र उतना ही

E ISSN 2320 – 0871
17 दिसंबर 2016

सशक्त और उत्तम होगा। उचित स्थायी भावों से चरित्र सुन्दर बनता है, सुझावों का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन लाने के लिए सकारात्मक सुझाव की ही सहायता लेनी चाहिए। सुझावों से चारित्रिक विकास पुष्ट होता है। कहानियों, महान् व्यक्तियों के संस्मरण और जीवन वृत्तान्त चरित्र बल को दिशा प्रदान करते हैं। आदर्श व्यक्ति, बड़े व्यक्ति, बुजुर्गों, माता-पिता शिक्षक आदि का अनुकरण कर अपने व्यवहार के साथ सामंजस्य करते हैं।

महापुरूषों की जीवनियां से प्रेरणा

सात्विक व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है। महापुरूषों ने सुख की अपेक्षा दुःख, सम्पत्ति की अपेक्षा दरिद्रता, प्रशंसा की अपेक्षा आघातों से अधिक ग्रहण किया है। तब जाकर आध्यात्मिक अंतर्ज्योति प्रकाशित हुई है। ये अच्छे विचार सोचने वाले, अच्छे शब्द बोलने वाले, अच्छे कार्य करने वाले, अच्छे संस्कारों से युक्त होते हैं। अतः इनका चरित्र गठन श्रेष्ठ संस्कारों से होता है। इनका मानना है कि बुरे कर्म बुरे संस्कार छोड़ते हैं। जो व्यक्ति सदा बुरे शब्द सुनता है, बुरे विचार सोचता है, बुरे कार्य करता है, उसका मन बुरे संस्कारों से परिपूर्ण होता है। वह बुरे संस्कारों का खिलौना बन कर बुरे कर्म कर डालता है। मन पर पड़े हुए संस्कार, आदत या स्वभाव में परिणित हो जाते हैं।

हम अपनी आंखों को अपने हाथों से ढक लेते हैं और कहते है अंधेरा है। मनुष्य की आत्मा में स्वभाव से ही प्रकाश है, सतोगुण विद्यमान है।

निष्कर्ष

सत्त्वगुण - जो ज्ञान की आराधना करता है वह सात्विक वृत्ति वाला होता है। वह पुरूष स्वर्गादि उच्च लोकों को प्राप्त होता है।

रजोगुण - जिसमें लोभ है, राग है, आसक्ति है वह रजोगुण वाला है, वह पुरूष मनुष्य लोक में रहता है।

तमोगुण - जिसमें प्रमाद, मोह, अज्ञान से चेतना आवृत्त वह तामसगुण वाला है। वह मनुष्य अधोगति को अर्थात् पशु, जानवर, कीट आदि को प्राप्त होता है। अतः उज्ज्वल चरित्र वाला व्यक्ति सत्व गुण से युक्त होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *लोढ़ा, महावीरमल, 1996, नैतिक शिक्षा के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
2. *पाण्डेय बृजेश, 2002, मूल्यपरक शिक्षाः वर्तमान परिदृश्य, भारतीय आधुनिक शिक्षा।*
3. *पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्रा, 2006, मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।*
4. *मिश्रा, रेणु मूल्यपरक शिक्षा, राजस्थान शिक्षण बोर्ड पत्रिका अंक 3-4 खण्ड 44-45*